Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

चैतन्य महाप्रभु और भारतीय स्वाधीनता संघर्ष

डॉ. गोपीराम शर्मा, सह आचार्य, हिन्दी विभाग,

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान-335001

Mail ID : drgrsharma76@gmail.com

चैतन्य महाप्रभु, जिन्हें गौरांग के नाम से भी जाना जाता है, 16वीं सदी के एक संत और समाज सुधारक थे, जिन्होंने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 18 फरवरी, 1486 को पश्चिम बंगाल के नवद्वीप में जन्मे, वे भगवान कृष्ण के प्रति अपनी शिक्षाओं और भक्ति के लिए लाखों लोगों द्वारा पूजे जाते हैं। इसकी भविष्यवाणी उन्होंने हर शहर और गांव में पहले ही कर दी थी -

"पृथिविते आचे यत नगरादि ग्राम

सर्वत्र प्रचार हैबे मोरा नाम।।"[1]

अर्थात् इस पृथ्वी के प्रत्येक नगर और गांव में मेरे नाम का गुणगान किया जाएगा।

16वीं शताब्दी की शुरुआत में भक्ति आंदोलन के सबसे महान संत श्री चैतन्य महाप्रभु ने आनंदमय गीत और नृत्य के साथ कृष्ण की पूजा करने की उनकी शैली ने वैष्णव धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। मध्यकाल के दौरान भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कई प्रकार की न्यूनताएं आ गई थीं। समाज में कर्मकांड, जाति व्यवस्था और ऊंच-नीच, भेदभाव घर कर गया था। भक्ति आंदोलन एक सुधारात्मक आंदोलन था, जिसकी विशेषता ईश्वर के प्रति गहन भक्ति या प्रेम थी। इस आंदोलन का उद्देश्य भारतीय समाज में सुधार करना था। वास्तव में भक्ति आंदोलन की व्यापकता और इसके पीछे के उद्देश्य विदेशी पराधीनता के खिलाफ भारतीय जनमानस को खड़ा करना था। जैसे ही विदेशी सत्ता भारत में काबिज होती है तो पहले-पहल संत और भक्त ही सामने आते हैं और व्यक्ति और समाज को सुदृढ़ कर स्वाधीनता की चेतना को जाग्रत करते हैं। कह सकते हैं स्वाधीनता के संघर्ष की शुरुआत यहीं से होती है।

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

हम अपनी पीढ़ी को परतंत्रता के बारे में ठीक से नहीं बताते हैं और न ही स्वाधीनता संघर्ष का सही इतिहास जानने की कोशिश करते हैं। ठीक इसी प्रकार उसके विरुद्ध लड़ने वालों के योगदान पर भी हम कोई सार्थक बहस नहीं कर पाते। स्वाधीनता का संघर्ष कब से प्रारंभ हुआ और कब जाकर समाप्त हुआ, यह हम अपनी पीढ़ी को ठीक से नहीं बताते हैं।

हम कब पराधीन हुए यह भी एक प्रश्न हैं, हम किन-किन विदेशी जातियों द्वारा पराधीन हुए-यह भी विवेचन का विषय है। यह प्रश्न इसलिए 'प्रश्न' के रूप में उठाने की कोशिश है क्योंकि सामान्यत: तो यही माना जाता है कि हम 200 वर्षों तक अंग्रेजों के गुलाम रहे और 1947 में स्वतंत्र हो गए।

यह एक विभ्रम-सा ही है इतिहास पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि कई सैकड़ों वर्षो से हमपर आक्रमण होते रहे पर क्रमिक रूप से पृथ्वीराज चौहान के बाद यहां विदेशी सत्ता की शुरुआत हुई थी। पहले पहल हम तुर्कों द्वारा शासित हुए, फिर अफगान, मुगल फिर बीच में अफगान और मुगलों से होते हुए यूरोपीय जातियां आती गईं। पुर्तगाली, डच, फ्रेंच और अंग्रेज, सब ने भारत भू को पराधीन बनाने की कोशिश की। तो, उत्तर में हम पाते हैं कि पराधीनता का काल लगभग 700-800 वर्षों का है। दूसरी बात, हम केवल अंग्रेजों द्वारा ही नहीं पुर्तगाली, डच, फ्रांसिसी और तुर्क, अफगान मुगलों द्वारा भी पराधीन हुए।

यह संयोग ही है जब हम पराधीनता में जा रहे थे ठीक उसी समय भक्तिकाल का उद्भव हो रहा था। भक्तिकाल का साहित्यकार उस विदेशी सत्ता से संघर्ष का साक्षी स्वयं बन रहा था। हम कह सकते हैं भक्तिकाल का साहित्य विदेशी सत्ता के बढ़ाव के साथ-साथ जवान हुआ है। प्रारंभ से ही संतों-भक्तों ने विदेशी सत्ता के विरुद्ध अपना स्वर उद्घोषित किया है।

भक्तिकाल का उदय भारत की एक विशिष्ट घटना है। यह आंदोलन कश्मीर-पंजाब से लेकर उत्तर भारत, पूर्वी भारत, गुजरात, दक्षिण भारत और असम-पश्चिम बंगाल तक फैल गया था। बहुत-से विद्वान आज भी इस आंदोलन को हिंदुओं की पराजित मानसिकता का परिणाम बताते हैं। दूसरे अन्य विद्वान जो अपनी अच्छी समझ के साथ इसे एक सांस्कृतिक जागरण तक बताने की कोशिश करते रहे हैं। परंतु यह आंदोलन विदेशी

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

सत्ता और पराधीनता के खिलाफ एक स्वाधीनता का आंदोलन था। इसमें संतों और भक्तों ने भिन्न-भिन्न राज्यों में अपनी-अपनी भाषाओं में लोगों के जागरण का कार्य कर विदेशी सत्ता के खिलाफ एक होने का संदेश दिया। संतों ने निर्गुण भक्ति के प्रचार के उपरांत भी 'राम' नाम के द्वारा समाज व राष्ट्र को एक सूत्र में जोड़ने का प्रयास किया। पराधीनता के कारण समाज में आई रुग्णताओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया-

जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।।[2]

संत रैदास ने स्वतंत्रता के लिए व्यक्ति को सक्षम होने के लिए प्रेरित करने वाली वाणी कही है -

पराधीनता पाप है जान लेहू रे मीत।

रविदास पराधीन सो कौन करे हैं प्रीत ।।[3]

इस समय जो संत-भक्त अपनी साहित्य रचना द्वारा जनता को जाग्रत कर रहे थे, वे स्वाधीनता की अलख जगा रहे थे। कबीर की बात करें तो उसे हम ज्ञानमार्गी कह देते हैं जबकि सच बात तो है कि वह भक्त हैं और उसे निर्गुण भक्तों के अंतर्गत रखा जाता है। कबीर का निर्गुण ईश्वर 'राम' है । संतों ने निर्गुण राम जपने का उपदेश दिया है। निर्गुण पंथियों को ज्ञानमार्गी माना जाता है सामान्यतः इनको भक्त नहीं कहा जाता, पर ये निर्गुण राम को मानते हैं-

"निर्गुण राम जपो रे भाई।

अविगत की गति लखी न जाई ।।

चारि वेद औ सुंम्रित पुरांना।

नौ व्याकरनां मरम न जांनां।।"[4]

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

यह राम घट घट में समाया हुआ है, उसका मर्म कोई नहीं जानता। वह समस्त वेद और विभेद से विवर्जित है पाप और पुण्य से अतीत है, ज्ञान और ध्यान का विषय है, स्थूल और सूक्ष्म से परे है।

इसी प्रकार चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम का संदेश फैलाने के लिए पूरे भारत में व्यापक यात्रा की। उन्होंने विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के विद्वानों के साथ जोशीले वाद-विवाद में भाग लिया और भक्ति के सामान्य सूत्र के माध्यम से विभिन्न संप्रदायों के बीच एकता को बढ़ावा दिया। भारत में एक गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भक्ति आंदोलन ने श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन के साथ एक परिवर्तनकारी पुनर्संरचना देखी। 15वीं शताब्दी में बंगाल में उभरे श्री चैतन्य ने भक्ति के मौजूदा ढांचे में एक गतिशील ऊर्जा का संचार किया तथा इसे गहन भक्ति अनुभव की ओर ले गए। उनके आगमन से पहले भक्ति आंदोलन ने खुद को देवताओं की प्रत्यक्ष पूजा की वकालत करने वाली एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया था, जिसमें आध्यात्मिक अभ्यास के केंद्रीय सिद्धांतों के रूप में प्रेम और भक्ति पर जोर दिया गया था। श्री चैतन्य ने इस भक्ति मार्ग में एक अनूठे उत्साह और भावनात्मक तीव्रता की भावना जगाई। उनकी शिक्षाओं ने ईश्वर के साथ गहन संवाद प्राप्त करने के साधन के रूप में पवित्र नामों, विशेष रूप से हरे कृष्ण मंत्र के जाप पर जोर दिया। श्री चैतन्य ने न केवल पवित्र नामों के सामूहिक जाप को लोकप्रिय बनाया, बल्कि ईश्वर की स्तुति में सामूहिक गायन और नृत्य, संकीर्तन के विचार की भी वकालत की। श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन के साथ भक्ति आंदोलन को एक उल्लेखनीय दिशा मिली।

इतिहासकार अमिय पी. सेन लिखते हैं-

"श्री कृष्ण चैतन्य (1486-1533), जिन्हें लगभग हमेशा 'चैतन्य' के नाम से संक्षिप्त किया जाता है, एक बहुत ही प्रतिष्ठित ऐतिहासिक व्यक्ति हैं और स्वाभाविक रूप से मिथकों और किंवदंतियों के बढ़ते समूह से संपन्न हैं। बंगाल के धार्मिक जीवन पर, जिस प्रांत में उनका जन्म हुआ था, उन्होंने एक ऐसा प्रभाव डाला जो बहुत बाद में रामकृष्ण परमहंस (1836-86) द्वारा किए गए प्रभाव के बराबर ही था। यह भी दिलचस्प है कि चैतन्य और रामकृष्ण हिंदू बंगाल में ज्ञात दो प्रमुख धार्मिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं क्रमशः वैष्णव और शाक्त। संयोग से दोनों ब्राह्मण थे, एक सामाजिक और अनुष्ठानिक पद जिसने शिक्षकों, विद्वानों

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

या आध्यात्मि चिकित्सकों के रूप में उनकी सार्वजनिक स्थिति को मजबूत करने में मदद की। हालाँकि यहाँ मुझे जिस बात की चिंता है, वह यह है कि जिस तरह से उनकी ऐतिहासिक उपस्थिति को परिभाषित और समझा गया है, खासकर हिंदू सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की ताकत और लचीलेपन के संबंध में। उदाहरण के लिए, इन दोनों हस्तियों को राजनीतिक अधीनता के प्रति स्वदेशी प्रतिक्रिया का प्रतीक माना जाता है। चैतन्य के मामले में, 'शत्रु' चाहे वास्तविक हो या काल्पनिक भारतीय-मुस्लिम शासन था और रामकृष्ण के मामले में ब्रिटिश उपनिवेशवाद था।"[5]

19वीं सदी में चैतन्य हिंदू बंगालियों के लिए एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में तेजी से उभरे। उन्होंने स्थानीय कुशासन के विरोध में आवाज उठाई। विदेशी सत्ता के आदेशों को मानने से इंकार कर दिया। चैतन्य के जीवन का एक प्रसिद्ध प्रसंग है जिसमें उन्होंने और उनके अनुयायियों ने वैष्णव जुलूस पर रोक लगाकर स्थानीय काजी के मनमाने आदेशों की अवहेलना की थी। चैतन्य महाप्रभु का यह कार्य शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा के पहले उदाहरण के रूप इतिहास में दर्ज है।

उन्होंने कीर्तन के रूप में कृष्ण की महिमा का कीर्तन और गायन करके सभी के लिए दिव्य प्रेम के द्वार खोल दिए। उन्होंने माना कि केवल कीर्तन करने से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, क्योंकि यह मन को भौतिक संसार से दिव्य संसार की ओर ले जाता है। वैष्णव जीवन शैली के अनुरूप, चैतन्य सत्य और अहिंसा के पक्षधर थे।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानंद प्रभु और हरिदास ठाकुर को कहा कि हर आदमी को हरिनाम गाने के लिए कहो। इस तरह आदेश पाकर, दोनों उपदेशक आगे बढ़े और जल्द ही जगई और मधाई से मिले, जो दो सबसे घृणित पात्र थे। महाप्रभु के आदेश को सुनकर उन्होंने उपदेशकों का अपमान किया, लेकिन जल्द ही भगवान द्वारा सिखाई गई भक्ति (कृष्ण के प्रति भक्ति) के प्रभाव से परिवर्तित हो गए। अब नादिया के लोग आश्चर्यचकित थे। उन्होंने कहा- "निमाई पंडित न केवल एक महान प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, बल्कि वे निश्चित रूप से सर्वशक्तिमान ईश्वर के एक मिशनरी हैं।"

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

महाप्रभु ने शंकराचार्य की सर्वेश्वरवादी व्याख्या को छुए बिना, अपने तरीके से सभी सूत्रों की व्याख्या की। अपनी गहरी समझ के साथ, सार्वभौम ने भगवान चैतन्य द्वारा दिए गए स्पष्टीकरणों की सच्चाई, सुंदरता और सामंजस्य को देखा, और वह यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हुआ कि यह पहली बार था जब उसे कोई ऐसा व्यक्ति मिला जो ब्रह्म सूत्रों को इतने सरल तरीके से समझा सकता था।

चैतन्य महाप्रभु समाज सुधार को लेकर आगे बढ़ते हैं। जाति- पांति पर ये प्रहार करते हैं। धार्मिक आडंबर को लेकर भी ये सजग रहते हैं। जप, माला, छापा, तिलक आदि पर ये प्रहार करते हैं। विदेशी सत्ता के प्रतीक काजी के विरोध में आवाज उठाते हैं और और पराधीनता के दुःख में जो भी जनता को हरि रस अमृत का पान कराते हैं। दीन-हीन समाज को एककर समाज में एकता स्थापित करने का प्रयास चैतन्य महाप्रभु द्वारा किया जाता है।

निष्कर्ष

भक्तों-संतों के सामने देश की पराधीनता की समस्या थी। इस समय तुर्कों-मुसलमानों ने देश को गुलाम बना लिया था। मारकाट और हिंसा का माहौल हो चला था। समय ऐसा चल रहा था कि मंदिर लूटे जा रहे थे मूर्तियां तोड़ी जा रही थी और भारतीय सनातन धर्म के चिह्नों को नष्ट किया जा रहा था। ऐसे समय में जो क्रांतिचेता साहित्यकार होता है उसका दायित्व होता है कि वह समाज को इस घड़ी से बचाए तथा विधर्मी ताकतों से लड़ने के लिए समाज को जाग्रत करे। ऐसे में संतों के सामने तीन तरह के कार्य थे। एक था मंदिरों में होने वाले नुक्सानों को कम करना, दूसरा- जो हिंदू चिह्नों-प्रतीकों पर होने वाले हमलों से समाज को बचाना और तीसरा समाज को एकजुट कर शक्ति संगठित करना।

इसके लिए संतों-भक्तों ने पहला कार्य किया कि जनता को जाग्रत कर उनकी जीवनी शक्ति बढ़ाने के लिए हरि रस अमृत का पान करने के लिए ईश्वर पर विश्वास रखने और उसका नाम जपने का आग्रह किया। दूसरा कार्य जो लोग माला पहनते थे, छापा लगाते थे तिलक लगाते थे , विधर्मी आक्रांता उन ज्यादा प्रहार करते थे, ज्यादा चोट करते थे। वे लोग उनकी गाजी की उपाधियों में तथा 'दार उल इस्लाम' की राह में मारे जाते

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

थे। ऐसे में धार्मिक चिह्नों को त्यागने लिए कहा। तीसरा समाज को संगठित करना था, इसके लिए जो समाज में जाति प्रथा थी, भेदभाव था, उससे समाज में एकता का अभाव हो चला था। समाज की एकता और मजबूती के लिए ऐसी बुराइयों को दूर करने का उन्होंने आह्वान किया।

कह सकते हैं कि चैतन्य महाप्रभु के काव्य में यही कुछ विशेषताएं हैं। ईश्वर का स्वरूप है, मूर्तिपूजा का विरोध है, जपमाला, छापा, तिलक आदि कर्मकांडों का विरोध है तथा समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए जाति प्रथा ऊंच-नीच भेदभाव आदि बुराइयों पर उनका प्रहार है।

परंतु मुख्य बात है कि हम चैतन्य महाप्रभु को केवल को कवि कह देते हैं, समाज सुधारक कह देते हैं या उनको भक्त आदि कह कर इतिश्री कर लेते हैं। बात यह है कि चैतन्य महाप्रभु एक स्वाधीनता के सिपाही हैं और जब विदेशी सत्ता यहां काबिज होती है और उस समय गुलामी के बाद हिंसा का नंगा नाच होता है। उसको रोकने के लिए तथा भारतीय जनता को जगाने के लिए उन्होंने अपना काव्य लिखा।

वास्तव में चैतन्य महाप्रभु स्वाधीनता आंदोलन के प्रहरी हैं, साहित्यकार हैं। इसी समय जब देश विदेशी आक्रांताओं पराभूत हो रहा था, चैतन्य महाप्रभु ने अपनी लेखनी के द्वारा न केवल बंगाल की आम जनता को फल की भारतीय जनमानस को जगाने का सार्थक प्रयत्न किया।

संदर्भ संकेत

1. https://www.iskconbangalore.org/blog/lord-chaitanya-social-reformer/
2. कबीर - डॉ. राजेंद्र भटनागर, पृष्ठ 43
3. श्री गुरु रविदास एवं मीरा पदावली-डेरा श्री 108 संत सखन दास जी, पृष्ठ 64
4. कबीर ग्रंथावली- पारसनाथ तिवारी, पद 153

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

5. अमिय पी. सेन एक इतिहासकार,चैतन्य : ए लाइफ एंड लिगेसी https://www.telegraphindia.com/culture/heritage/chaitanya-mahaprabhu-a-relook-at-the-saint-and-reformer/cid/1695447